❖ अमरावती, गुरुवार ६ से १२ मार्च २०२५ ❖ वर्ष १५ ❖ अंक ३७ मूल्य १०/- पृष्ठ १२ ❖पोस्टल रजि. नं. ATI/RNP/268/2025-2027 डाक : शुक्रवार - शनिवार

विदर्भ स्वाभिमान

RNI NO. MAHHIN / 2010 /43881

संपादक : सुभाषचंद्र जे. दुबे | प्रबंधक : सौ. वीणा एस. दुबे

विशेषांक

बाबूजी के आदर्श

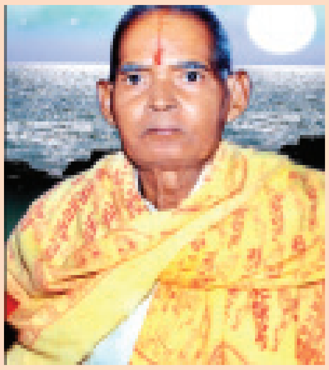

जीवन में महिलाओं को सदैव महत्व देना चाहिए. आज उन्हें आरक्षण भरपूर दिया जा रहा है लेकिन सुरक्षा के मामले में कमी है. जब संस्कार होता है तो निश्चित तौर पर महिलाओं पर अत्याचार कम होते हैं. महिलाओं को एक दूसरे को समझना और सम्मान देना होगा तभी असली खुशी परिवार तथा समाज में होगी.

विशेष मार्गदर्शन

नारी तू नारायणी, तुझसे ही संसार बना

भारतीय संस्कृति और संस्कारों में महिलाओंको देवी का दर्जा दिया गया है. यही कारण है कि महिलाओं को महत्ता को बताने से भारतीय शास्त्र भी भरे पड़े हैं. विश्व महिला दिवस पर समस्त महिलाओं को विदर्भ स्वाभिमान का नमन, वंदन. भारतीय संस्कारों की जननी के रूप में महिलाओं का जहां जिक्र किया जाता है, वहीं यहां तक कहा जाता है कि महिलाओं का जहां सम्मान होता है, उनका आदर होता है, उसी घर में देवी-देवता भी बसते हैं. यही कारण है कि आज भी महिलाओं के सम्मान, बराबरी का दर्जा देने के मामले में भारत को पूरे विश्व में सम्मान के रूप में देखा जाता है.

महिलाओं का हर रूप त्याग, समर्पण, आत्मीयता के साथ ही परिवार की उन्नति के लिए समर्पित भाव से काम करने वाली महिला के रूप में देखा जाता है. उनके कई रूप होते हैं और सभी रूपों में वह पूज्यनीय होती है. मां के रूप में जहां वह जननी होती है, वहीं बहन

के रूप में भाई की प्रगति की कामना करती है. इस बारे में कविता बेहतरीन है, जिसमें महिलाओं के हर रूप को बताने का प्रयास किया गया है. हर व्यक्ति के जीवन में मां के बगैर जीवन की और खुशियों की कल्पना भी नहीं की जा सकती है. महिलाओं को जिस घर में सम्मान दिया जाता है, उस घर में स्वर्ग सा आनंद रहता है. लेकिन जिस घर में महिलाओं का अपमान होता है, उन्हें प्रताड़ित किया जात है, उस घर से लक्ष्मी स्वयं ही जाती हैं. हमारे समाज में अ इसका बारीकी से निरीक्षण करें तो निश्चित तौर पर यह दिखाई देगा कि जिस घर में महिलाओं का अपमान होता है, उस घर में कभी भी खुशियों वाली स्थिति नहीं रहती है. मां के रूप में जहां वह हमें जन्म देती है, वहीं पत्नी के रूप में हमारे जीवन को खुशियों से भर देती है. आज महिलाओं ने स्वयं की मेहनत, लगन, समर्पण से भीतर और बाहर दोनों ही स्थानों पर स्वयं को साबित किया है. महिलाओं के अनेक रूप होते हैं, कभी वह मां बनकर सृष्टि रचती, कभी पत्नी बनकर त्याग करती है, उसके हर रूप ही निराले होते हैं. महिलाएं ही ऐसी होती हैं, जिनके हर रूप में वह आदरणीय और पूज्यनीय होती है. हर व्यक्ति के जीवन में मां के जैसा त्यागी, बहन के जैसा अच्छा सोचने वाला नहीं हो सकता है. कभी मां बन के सृष्टि रचती,कभी पत्नी बनकर त्याग करें, कभी बहन के रूप में भाई के पग-पग जीवन में साथ रहे. फिर भी इस धरती पर तुझको, हर बार नकारा जाता है. तेरी त्याग तपस्या को, एक पल में भुलाया जाता है. सृष्टि का श्रृंगार है तू ,प्रकृति का अनुपम उपहार है तू. इसे नकारो ना लोगों, इससे जीवन का सार बना,नारी तू नारायणी,तुझसे ही संसार बना. हर व्यक्ति के जीवन में महिलाओं का अपार स्थान होता है. जिस घर में महिलाओं को पूजा जाता है, वहां खुशहाली, समृद्धि, स्वास्थ्य बेहतरीन के साथ ही तरक्की लगातार होती रहती है. लेकिन जहां पर महिलाओं का अपमान होता है, वहां से देवता भी रूष्ट हो जाते हैं और उस घर में सदैव मुसीबतें ही चलती हैं. विश्व महिला दिवस पर हम सभी को संकल्प लेना चाहिए कि हमारे जीवन में आने वाली ही नहीं तो हर महिला का सम्मान करें. दूसरों को भी महिलाओं का सम्मान करना चाहिए. समय के साथ नहीं बहते हुए सभी महिलाओं को भी अपने आदर्श संस्कार और सम्मान को बरकरार रखते हुए सदैव सहयोग देने का प्रयास करना चाहिए. निश्चित तौर पर ऐसा होने पर धरती पर स्वर्ग उतरे बगैर नहीं रहेगा.

स्वागतम...! सुस्वागतम ...!!

विदर्भ स्वाभिमान- आनंद परिवार-आदर्श महिला पुरस्कार 2025, प्रमुख अतिथि

मा.श्री.सौरभ कटियार
जिलाधिकारी, अमरावती जिला

मा. सचिन कलंत्रे
मनपा आयुक्त, अमरावती महानगरपालिका.

सौ.कल्पना बारवकर
पुलिस उपायुक्त अमरावती शहर पुलिस

मा.संजीता मोहापात्र
सीईओ, जिला परिषद, अमरावती

मा.श्री.सुधीर महाजन
प्राचार्य, पोदार इंटरनेशनल स्कूल,अम.

मा. एड.विजय बोथरा,
अध्यक्ष, अभिनंदन अर्बन बैंक, अम.

मा.चंद्रकुमारजी जाजोदिया
वरिष्ठ समाजसेवी.

पूज्यनीय श्रीमती शिवपतिदेवी दुबे
प्रेरणा स्रोत मां

दिनांक 9 मार्च 2025 समय 10 बजे से 2 बजे तक | कार्यक्रम स्थल-जोशी हाल, श्याम चौक के पीछे, अमरावती

संपादकीय ......

राष्ट्र विकास में महिलाओं की सराहनीय भूमिका

विश्व महिला दिवस के उपलक्ष्य में सभी महिलाओं को शुभकामनाएं. सभी महिलाओं का जीवन खुशियों से भरा रहे और महिलाएं स्वस्थ रहें, घर परिवार तथा राष्ट्र के विकास में उत्तम भूमिका निभाएं. महिलाओं के त्याग को लेकर कई बातें कही जाती हैं. कहा जाता है कि महिलाओं का त्याग ही परिवार और समाज को आगे बढ़ाता है. महिलाओं के त्याग को लेकर हर भारतीय ग्रंथ भरे पड़े हैं, कभी मां के त्याग, कभी पत्नी के साथ से ही परिवार में किस तरह खुशहाली होती है. अमरावती जिला तो महिलाओं को अपार सम्मान देने वाला जिला रहा है. यहां से महिला सांसद, देश को पहला महिला राष्ट्रपति मिला है. आज भी संभागीय आयुक्त श्वेता सिंगल, अमरावती की विधायक सौ.सुलभा खोड़के, पूर्व सांसद नवनीत राणा के साथ ही जिला परिषद सीईओ संजीता मोहपात्रा, मनपा उपायुक्त मेघना वासनकर, डीसीपी कल्पना बारवकर सहित बड़ी संख्या में महिला अधिकारी और महिला नेत्रियों ने अपने काम की अमिट छाप छोड़ी है. वैसे भी कर्मठता, त्याग और समर्पित रूप से काम के मामले में महिलाएं सदैव अग्रणी रहती हैं.

महिलाओं को सृजन की देवी कहा जाता है. सृजन की क्षमता उनमें ही होती है. अपनी जिंदगी दांव पर लगाकर किसी को जन्म देना उनके ही बूते की बात है. इसके साथ ही किसी की परवरिश करना, अपना घर छोड़कर किसी और के घर जाना और उस घर को भी स्वर्ग बनाने, अपने माता-पिता के अलावा किसी और को भी माता-पिता के रूप में स्वीकार करने, अपने जीवनसाथी की इच्छाओं को सर्वोपरि मानना, समाज की बंदिशों में जीवन जीना, पारिवारिक या बच्चों की खुशी को प्रमुखता देना उनकी खूबी है. जिस तरह पानी होता है, निर्मल होता है, उसी तरह महिलाओं में निर्मलता होती है. वह दो घरों को रोशन करती हैं. भारतीय समाज में महिलाओं के त्याग के कुछ उदाहरण दिए जा सकते हैं. भारत की आज़ादी की लड़ाई में वीरांगना लक्ष्मीबाई का त्याग, १९४२ के भारत छोड़ो आंदोलन में ताराबाई का त्याग, महिलाओं के सामने कई चुनौतियां भी हैं. शिक्षा की कमी, अपर्याप्त स्वास्थ्य सुविधाएं, लैंगिक भेदभाव, लैंगिक वेतन अंतर, असमान अधिकार, बलात्कार, यौन उत्पीड़न, दहेज संबंधी समस्याएं, घरेलू हिंसा जैसी चुनौतियां भी हैं. बेटियों को उच्च शिक्षा के साथ ही स्वास्थ्य पर भी ध्यान देते हुए स्वयं को मजबूत बनाना होगा. ताकि असामाजिक तत्वों से निपटने में भी कारगर रहें. विश्व महिला दिवस पर सभी महिलाओं को शुभकामनाएं, सभी का जीवन खुशियों से आबाद रहे और स्वस्थ रहें, मस्त रहें, प्रभु चरणों में यही कामना.

नारी की जहां पूजा होती है वही संपन्नता रहती है

भारतीय संस्कृति में नारी को सदैव अपार सम्मान दिया गया है. महिला की महत्ता से जहां भारतीय शास्त्र भरे पड़े हैं वहीं दू भारतीय महिला का महत्व बतान के लिए संस्कृत का श्लोक यत्र नार्यस्त पूजंते, रमंते तत्र देवता. इसका मतलब ज का सम्मान होत में भगवान भी प्रसन्न रहते हैं और उसे घर में कभी किसी बात की कमी नहीं रहती है.

महिलाओं का हर रूप जहां निराला और त्याग तथा अपनेपन से भरा हुआ रहता है वहीं घर को स्वर्ग बनाने में महिलाओं की भूमिका सदैव बेहतरीन रहती है. वह जहां मन के रूप में पूजनीय होती है वहीं पत्नी के रूप में उसका परिवार के प्रति त्याग और सभी रिश्तों में महिलाओं का त्याग और अपनापन अनुकरणीय होता है. उन्हें किसी एक दिन में सीमित नहीं किया जा सकता है. हमारे घर में आज उनका महत्व हर सेकंड हर मिनट और हर घंटा रहता है. हमारे बुजुर्गों ने महिलाओं की महत्व को ध्यान में रखते हुए ही कहा है कि बिना महिला के घर भी भूत का डेरा लगता है. महिलाओं जैसा त्याग और समर्पण किसी में नहीं हो सकता है. विदर्भ स्वाभिमान तथा आनंद परिवार सभी महिलाओं को नमन और वंदन करता है.

महिलाओं में ही समाया है पुरुष का अस्तित्व

अमरावती- भारतीय संस्कृति और परिवेश में महिलाओं को सदैव अपार सम्मान और देव तुल्य माना गया है. इसकी पुष्टि स्वयं समय-समय पर भगवान ने अपने अवतार में भी की है. अपने नाम से पहले प्रभु ने राधा और सीता का नाम लगाया है. इससे महिलाओं की कितनी महत्ता है इसका सहजता से अंदाज लगाया जा सकता है. राष्ट्रीय स्तर के विद्वान और पोदार इंटरनेशनल स्कूल के प्राचार्य सुधीर महाजन के मुताबिक

जिसे महिला मां के रूप में समझ में आई वह जिजाऊ का शिवबा हो गया, जिसे महिला बहन के रूप में समझ में आई, वह मुक्ताई का ज्ञानदेव हो गया, जिसे महिला मित्र के रूप में समझ में आई,वह राधे का श्याम हो गया,

जिसे महिला पत्नी के रूप में समझ में आई, वह सीता का राम हो गया.

अंग्रेजी में भी वूमेन के रूप में महिलाओं की महत्ता को व्यक्त करते हुए प्राचार्य सुधीर महाजन ने कहा कि महिलाएं ही सृजन का कार्य करती हैं. Woman में ही man है, Her में ही He है Hero में से her हटा दो तो शुन्य O बचता है.

महिलाओं में ही पुरुष समाया हुआ होता है. महिला के अस्तित्व में ही पुरुष का अस्तित्व छुपा होता है. इसके लिए अंग्रेजी के वूमेन शब्द का सहारा लेते हुए उन्होंने कहा कि बिना महिला के पुरुष का अस्तित्व नहीं हो सकता है. प्राचार्य सुधीर महाजन के मुताबिक महिलाओं की महत्ता भगवान भी नहीं नकार सके. यही कारण है कि प्रभु में अपने नाम से भी पहले महिला का नाम दिया है. वह चाहे राधेश्याम हो अथवा सीताराम. यहां भी पहले महिलाओं को ही सम्मान दिया गया है. उनके जैसा त्याग और उनके जैसा समर्पण किसी में नहीं हो सकता है. विश्व महिला दिवस के उपलक्ष में सुधीर महाजन ने विदर्भ स्वाभिमान तथा आनंद परिवार की पहल की सराहना की. विदर्भ स्वाभिमान के हर नेक पहल में सहयोग करने का भरोसा भी दिलाया.

हिन्दी साप्ताहिक विदर्भ स्वाभिमान यह पत्र मालिक, प्रकाशक, सम्पादक-सुभाषचंद्र जमुनाप्रसाद दुबे ने एस.बी. प्रिन्टर्स, गांधी चौक,जिला अमरावती (महाराष्ट्र)से मुद्रित कर प्रकाशित किया है. मुद्रक- श्री संदीप बागडे,एस.बी. प्रिन्टर्स, गांधी चौक,अमरावती.जिला अमरावती (महाराष्ट्र).प्रकाशन स्थल-साप्ताहिक विदर्भ स्वाभिमान, छाया कॉलोनी,अकोली रोड,अमरावती. (महाराष्ट्र) मुख्य सम्पादक- सुभाषचंद्र जे.दुबे (पी.आर.बी.कानून के अनुसार सर्वस्वी जवाबदार).मुख्य प्रबंधक- वीणा दुबे,(सभी विवाद अमरावती न्यायालय अंतर्गत)आर.एन.आई.रजिस्ट्रेशन नंबर MAHHIN/2010/43881 मोबाइल नं.-09423426199,8855019189/8208407139
E-Mail-vidarbh.swabhiman@gmail.com | www.vidarbhswabhiman

विदर्भ स्वाभिमान आनंद परिवार
आदर्श महिला पुरस्कार २०२५

सबका मंगल हो की करती है कामना

सामाजिक के साथ पर्यावरण कार्यों में अग्रणी है डॉ. कमलताई गवई

विदर्भ स्वाभिमान, ५ फरवरी

अमरावती- शहर ही नहीं तो विश्व स्तर पर अमरावती के गवई परिवार को गिना जाता है. इस परिवार की प्रमुख तथा पूर्व लेडी गवर्नर डा. कमल ताई गवई जहां आदर्श मां के रूप में परिवार को संभालने का कार्य किया वहीं दूसरी ओर उम्र दराज होने के बावजूद भी आज भी सामाजिक और पर्यावरण के कार्यों में सदैव अग्रणी रहती है. उनका कहना है कि महिलाओं में ही अपार क्षमता होती है. महिलाएं अगर संस्कारों को महत्व देते हुए सदैव बच्चों पर बचपन से ही आदर्श संस्कार डालें तो निश्चित तौर पर आदर्श युवाओं की पीढ़ी के रूप में देश को आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता है. पूर्व राज्यपाल तथा राष्ट्रीय स्तर के नेता दादासाहब गवई की जीवन संगिनी के रूप में जहां उन्होंने संघर्ष से लेकर कामयाबी की ऊंचाई तक साथ दिया वहीं दोनों बेटे तथा बेटी भी आज सामाजिक एवं राष्ट्रीय कार्य में अपना योगदान दे रहे हैं.

विदर्भ स्वाभिमान महिला रत्न पुरस्कार के लिए उनका चयन किया गया है. इस उपलक्ष में दिए गए साक्षात्कार में उन्होंने बताया कि मानव द्वारा जिस तरह से पर्यावरण के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है इसका खामियाजा आने वाली पीढ़ियों को भुगतनी पड़ सकती है. इसको ध्यान में रखते हुए उन्होंने नया उपक्रम शुरू किया है, इसके तहत ऑक्सीजन वाले पेड़ों के बीच वृक्षारोपण के साथ उनके संवर्धन की दिशा में सभी से आग्रह किया है. उनका मानना है कि जिस तेजी से भूजल स्तर गिर रहा है उसके मदेनजर भविष्य में गंभीर समस्या पैदा हो सकती है. हर व्यक्ति को जीवन में दो पौधे रोपित करने और इन पौधों के माध्यम से जीवन में परमार्थ का कार्य करने की सलाह देते हुए वह कहती हैं कि एक पेड़ लगाकर अगर हम उसे बड़ा करते हैं तो वह जहां पर्यावरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है वही भीषण गर्मी से भी लोगों को राहत देने का कार्य करता है. विदर्भ स्वाभिमान को उत्तरोत्तर प्रगति की कामना की.

आत्मनिर्भरता और सक्षमीकरण हो महिलाओं की प्राथमिकता

संभागीय आयुक्त श्रीमती श्वेता सिंघल की महिलाओं को सलाह

विदर्भ स्वाभिमान, ५ मार्च

अमरावती- महिलाओं के लिए आज अपार मौके हैं, महिलाओं को स्वयं की मेहनत, लगन और महत्वाकांक्षा को बढ़ाते हुए महिला सक्षमीकरण के साथ आर्थिक निर्भरता के लिए प्रयास करना चाहिए. महिलाएं अगर ठान लें तो उनमें असंभव को भी संभव करने की क्षमता होती है. जीवन में कामयाबी के लिए मेहनत को छोड़कर दूसरा पर्याय नहीं रहने की बात संभागीय आयुक्त श्रीमती श्वेता सिंघल ने कही.

उनके मुताबिक जीवन में समय का अत्याधिक महत्व होता है. बचपन से लेकर पढ़ाई पर जोर होना चाहिए. इस क्षेत्र में हर छात्रा को अपना सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए. आज बेटियों,महिलाओं के लिए अनेकों सरकारी योजनाएं हैं. स्वयं में ही इस तरह की काबिलियत को विकसित करना चाहिए, जिससे उन्हें आर्थिक मजबूती मिलने में मदद मिले. महिलाओं में अपार क्षमता होने की बात कहते हुए विश्व महिला दिवस पर सभी महिलाओं से आर्थिक मजबूती के लिए ईमानदारी से प्रयास करने का संकल्प लेना चाहिए. शिक्षा के माध्यम से रोजगार तथा स्वयंरोजगार की दिशा में सभी महिलाओं को प्रयास करने की सलाह दी. अनुशासन को जीवन में अत्याधिक महत्वपूर्ण बताते हुए उन्होंने कहा कि जीवन में अनुशासन का अत्याधिक महत्व है. बचपन के संस्कार और अनुशासन में जीने की आदत ही हमें जिंदगी में तय किया गया लक्ष्य पूरा करने का मौका देते हैं. उनके मुताबिक काम के प्रति अगर समर्पण हो तो सफलता निश्चित मिलती है. महिलाओं को स्वयं को पहचानने और आर्थिक सक्षमीकरण के साथ ही आत्मनिर्भर बनने की सलाह दी.सक्षमीकरण तथा महिलाओं की आत्मनिर्भरता को जीवन में विकास के लिए जरूरी बताते हुए उन्होंने कहा कि अगर मेहनत ईमानदारी से की जाए तो सफलता निश्चित रहती है. कौशल विकास का दौर है, ऐसे में महिलाओं को प्रशिक्षण के लिए कई विषय हैं, जिसका लाभ लेकर महिलाओं को अपना आर्थिक विकास करना चाहिए.

स्वाभिमानी महिलाएं ही रचती हैं इतिहास-गौरी गणेश अय्यर

अमरावती- महिलाओं में अपार क्षमता होती है. महिलाएं जब अपनी योग्यता समझ जाती है तो उनमें मल्टीटास्किंग काम करने में सक्षम रहने और महिलाओं के कारण की घर में सदैव खुशी रहने की बात पूर्व प्राचार्य गौरी गणेश अय्यर ने कहीं. उन्होंने ९ मार्च को आयोजित महिला सम्मान कार्यक्रम को अपनी शुभकामनाएं देते हुए कहा कि विदर्भ स्वाभिमान तथा आनंद परिवार सामाजिक तथा मानव धर्म एवं राष्ट्र धर्म के कार्यों में सदैव लगे रहते हैं. उनकी यह पहल सराहनीय है. उनके मुताबिक महिलाएं आज हर क्षेत्र में आगे हैं. लेकिन इसके साथ ही समझदारी की कमी के कारण कई बार दिक्कत वाली स्थिति आती है. जीवन अथवा परिवार में अत्यधिक ईगो से बचने का प्रयास करना चाहिए. जिस घर में महिलाएं समझदार होती हैं वहां हमेशा खुशियां होती हैं. महिलाओं को स्वाभिमान के साथ आत्मनिर्भर बनकर आर्थिक मजबूती के लिए छोटे-मोटे व्यवसाय के माध्यम से प्रयास करना चाहिए. इससे जहां महिलाओं का समय बीतता है वही आर्थिक मजबूती के कारण परिवार को भी सहयोग मिलता है.

अमरावती के जिलाधिकारी सौरभ कटियार की जीवन संगिनी उच्च विद्या विभूषित डॉ. मोनिका कटियार से विश्व महिला दिवस के उपलक्ष्य में विदर्भ स्वाभिमान की श्वेता दुबे ने साक्षात्कार लिया. मौके पर उपस्थित संपादक सुभाष दुबे.

आत्मनिर्भर बने, व्यस्त रहें खुश रहें

श्वेता दुबे,५ मार्च

अमरावती - महिलाओं के लिए आज अपार मौके हैं, उन्हें अपनी मेहनत और लगन से अपनी तरक्की स्वयं तय करनी होगी. उच्च शिक्षा तथा बेहतरीन प्रशिक्षण के माध्यम से स्वयं का रोजगार करने का प्रयास करने के साथ अन्य जरूरतमंद महिलाओं को भी मौका देने का प्रयास करना चाहिए. इस आशय की सलाह उच्च विद्या विभूषित डॉ.मोनिका सौरभ कटियार ने दी.

विदर्भ स्वाभिमान के महिला दिवस कार्यक्रम को शुभकामनाएं देते हुए डॉ. मोनिका कटियार ने बताया कि उनका जन्म गोरखपुर में हुआ और पिता रेलवे में रहने के कारण तबादलों के कारण कई बार कई शहरों में जाने का और समझने का मौका मिला है. बचपन से ही मेधावी छात्रा रही मोनिका कटियार १०वीं तथा १२वीं में जिले में टॉप थी. उन्होंने एमबीबीएस पश्चात गायनिक में एम. एस. की डिग्री हासिल की. खुशमिजाज व्यक्तित्व की धनी डॉ. मोनिका कटियार क्या कहना है कि जीवन में सुख और दुख में जो लोग समान भाव में रहते हैं उन्हें कोई भी दुख नहीं डिगा सकता है. बेटियों को मेहनत के साथ पढ़ाई करने और स्वयं को आत्मनिर्भर बनाने की सलाह देते हुए उन्होंने कहा कि जीवन में अनुशासन, संस्कार और मेहनत का कोई पर्याय नहीं रहता है. समय प्रबंधन करने में

डॉ. मोनिका कटियार की महिलाओं को सलाह

जिसे महारत हासिल हो गई उसकी कामयाबी को कोई नहीं रोक सकता है. महिलाओं के लिए वर्तमान में हर क्षेत्र में अपार संभावनाएं हैं. जब हम ईमानदारी और मेहनत से कोई काम करते हैं तो सफलता निश्चित मिलती है. साक्षात्कार के दौरान उन्होंने बताया कि पहली ही मुलाकात में जीवनसाथी के रूप में उन्होंने सौरभ कटियार को पसंद कर लिया और आज २० महीने की उनकी बेटी काशवी परिवार की खुशी का माध्यम बनी हुई है.

उन्होंने कहा कि जब हम स्वयं को व्यस्त रखते हैं तो हम भी खुश रहते हैं और नाहक की बातें भी हमारे दिमाग में नहीं रहती है. बेहतरीन डॉक्टर के साथ संवेदनशील महिला है. विश्व महिला दिवस के उपलक्ष्य में विश्व भर की महिलाओं को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि अब महिलाएं अबला नहीं रही है, भारतीय सेना, पुलिस के साथ सभी क्षेत्रों में महिलाओं ने स्वयं को साबित करते हुए यह संदेश दिया है कि अब वह पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर काम करने में सक्षम है. आदर्श मां के साथ सभी रिश्तों को बेहतरीन तरीके से न्याय देने के साथ परिवार, समाज तथा राष्ट्र के विकास में योगदान दे रही है.

डीसीपी कल्पना बारवकर ने कहा

महिलाएं हैं मल्टीटास्किंग

अमरावती - महिलाओं में अपार क्षमता होती है. जहां वह सृजन की ताकत रखती हैं, वहीं हर काम में स्वयं को आगे रखने में भी पीछे नहीं रहती हैं. आज महिलाओं ने हर क्षेत्र में स्वयं को साबित किया है. जहां नौकरी करते हुए वहां बेहतरीन काम करती हैं, वहीं दूसरी ओर परिवार में मां, पत्नी के साथ ही सभी रिश्तों को भी पूरी संजीदगी से निभाती हैं. महिलाओं को एक दिन में नहीं बांधा जा सकता है, उनकी हर सेकंड अपनी महत्ता होती है. महिलाएं सदैव मल्टीटास्किंग भूमिका में रहती हैं. इस आशय की बात अमरावती शहर पुलिस आयुक्तालय की पुलिस उपायुक्त कल्पना बारवकर ने कही. विश्व महिला दिवस के उपलक्ष्य में राष्ट्र धर्म, मानवधर्म और सेवा धर्म को ही महत्व देने वाले राष्ट्रीय साप्ताहिक विदर्भ स्वाभिमान को दिए साक्षात्कार में उन्होंने कहा कि प्रकृति ने महिलाओं को संतुलन का विशेष आशिर्वाद दिया है. महिलाएं घर के भीतर भी और बाहर भी अपने कार्य से सभी को प्रभावित करती हैं. घर की बातें घर और कार्यालय में ही छोड़ने की सबसे बड़ी खूबी केवल म हिलाओं में होती है. उसमें अपार क्षमता होती है. वह समर्पित भाव से काम करती हैं, जो भी जिम्मेदारी सौंपी जाती है, उसे बेहतरीन तरीके से निभाने की मानसिकता में रहती है. विश्व महिला दिवस पर उन्होंने सभी महिलाओं को हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए परिवार तथा राष्ट्र के कार्य में योगदान देने तथा स्वयं खुश रहने और परिवार को भी खुश रखने की सलाह दी.

महिलाएं दें साथ तो बने बात

डॉ.प्रांजल शर्मा का प्रतिपादन

अमरावती- महिलाओं को समझने का कार्य जिस दिन महिलाएं कर लेंगी, उसी दिन महिलाओं की आधी से अधिक समस्या का समाधान हो जाएगा, इस आशय का स्पष्ट मत सुख्यात महिला रोग विशेषज्ञ डॉ.प्रांजल राजेश शर्मा ने किया. उनके मुताबिक महिलाओं को एक दिन में नहीं समेटा जा सकता है. महिलाओं को सदैव सम्मान देना चाहिए. इससे निश्चित तौर पर महिलाओं का हौसला बढ़ेगा. उनके त्याग और समर्पण की कदर करते हुए उन्हें सदैव प्रोत्साहित करने का काम होना चाहिए.

शादी के बाद पहली डिलीवरी मायके में होने जैसी परम्परा पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि बहू की जान से बढ़कर परम्पराएं नहीं होनी चाहिए. जो बहू गर्भवती होने के बाद भी ९ महीने तक घर के सभी काम करती है, जितना काम वह करती है, उसका पैसों में मूल्यांकन नहीं किया जा सकता है, ऐसे में परम्परा के नाम पर उसकी जिंदगी खतरे में डालने की मानसिकता बदलनी चाहिए. बहू का मायका अगर ग्रामीण क्षेत्र में है और समय पर उपचार की सुविधा नहीं है तो केवल परम्परा के नाम पर उसे मायके में भेजने का आग्रह नहीं होना चाहिए. सास अगर बहू को बेटी मानकर अपनी बेटी के लिए जो अपेक्षा करती है, बहू की वही अपेक्षा पूरा करना सीख ले तो निश्चित तौर पर बहू भी सास की बेटी जैसा सम्मान देने लगे तो निश्चित तौर पर बहू बेटी की भूमिका में आएगी. लेकिन पहली डिलीवरी मायके में कराने का आग्रह करने वाली सास यह क्यों नहीं सोचती है कि बहू की संतान उसके परिवार की सदस्य है. क्या फर्क पड़ता है कुछ हजार खर्च करने से लेकिन समय रहते मानसिकता बदलना जरूरी है. इसके लिए यह जरूरी है कि महिला ही महिलाओं के दर्द को समझने का प्रयास करे. उनके मुताबिक जिस दिन ऐसा हो जाएगा, उस दिन हर घर स्वर्ग हुए बगैर नहीं रहेगा. विश्व महिला दिवस की उन्होंने सभी महिलाओं को शुभकामनाएं दी.

सनातन धर्म में महिलाओं को सदैव अपार सम्मान दिया गया है. समय के साथ महिलाओं को अपना महत्व समझना होगा. उन्हें आदर्श महिला बनते हुए संस्कारों की जननी की अपनी भूमिका निभानी होगी. इससे परिवार तथा राष्ट्र का निश्चित तौर पर कल्याण होगा.

विदर्भ स्वाभिमान आनंद परिवार | आदर्श महिला पुरस्कार २०२५

मानव सेवा और जीव सेवा का पर्याय बना अर्हम ग्रुप

डॉ.दीपिका दामानी मानती हैं सेवा को परमोधर्म

विदर्भ स्वाभिमान,५ मार्च

अमरावती- प्रभु ने हमें जीवन दिया है और गुरुदेव ने माता पिता के साथ इस जीवन को संवारने का कार्य किया है. मानव जीवन बडे भाग्य से मिला है. इसका उपयोग जब परमार्थ के लिए करते हैं तो जीवन धन्य हो जाता है. परोपकार से मिलने वाला संतोष करोड़ों रुपए की दौलत से अधिक होता है, यह कहना है पिछले १७ वर्षों से सेवा भावी अर्हम ग्रुप के माध्यम से गरीब छात्रों की मदद तथा समस्त जीवों की सेवा का प्रयास करने वाली प्रा.डॉ. दीपिका दामानी का.

विदर्भ स्वाभिमान महिला रत्न पुरस्कार के लिए चुने जाने पर साक्षात्कार में विनम्रता के साथ कहा थी, वह कुछ भी नहीं है लेकिन जब राष्ट्रसंत आचार्य नम्रमुनि के आशीर्वाद और प्रेरणा से मानवता तथा जीव जंतुओं की सेवा करने का मौका मिला, तो वह सभी समाज को भाग्यशाली मानते हैं. दीपिका दामानी के मुताबिक जीवन में सत्कार्य परमार्थ का कार्य सदैव प्रेरणा देता है. अभी तक अनेक पुरस्कार प्राप्त करने वाली डॉ. दीपिका के मुताबिक जब हम शुद्ध भावना से कोई भी कार्य करते हैं तो उसे गुरुदेव और प्रभु का आशीर्वाद मिल जाता है, ऐसा कार्य कभी भी असफल नहीं हो सकता है. मानवता की सेवा को सबसे बड़ी सेवा मानने वाली प्रा.दीपिका दामानी के मुताबिक हमारी मन का दया भाव हमेशा जागृत रहना चाहिए. इससे हमें अपार संतोष मिलता है. विश्व महिला दिवस पर सभी महिलाओं को हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए उन्होंने कहा कि महिलाओं में सृजन की अपार क्षमता प्रभु ने दी है. उन्हें अपनी क्षमता को पहचानते हुए सदा आदर्श भूमिकाएं निभाते हुए परिवार समाज तथा राष्ट्र का गौरव बनने का प्रयास करना चाहिए. आज महिलाओं ने स्वयं को हर क्षेत्र में साबित किया है और शानदार सफलता की हासिल की है.

सामाजिक एकता ही करती है समाज को मजबूत

म्यांमार में भारत के वाणिज्य राजदूत मोहनराव पिंपले का प्रतिपादन

विदर्भ स्वाभिमान,५ मार्च

अमरावती- किसी भी समाज की प्रगति के लिए सामाजिक एकता जरूरी होती है. जब समाज में एकता होती है तो वह समाज जहां प्रगति में आगे रहता है, वहीं उस समाज का राष्ट्र विकास में भी महत्व होता है. ऐसे में समाज के हर व्यक्ति को अपना सामाजिक योगदान देने का प्रयास करना चाहिए. इस आशय का प्रतिपादन सोमवंशी आर्य क्षत्रिय समाज के उच्च विद्याविभूषित और फिलहाल म्यांमार में भारत के वाणिज्य राजदूत मोहनराव पिंपले ने किया. उनके मुताबिक समाज में एकता का दीर्घकालीन लाभ होता है. साथ ही राष्ट्र के विकास में भी समाज का योगदान मिलता है. ९ मार्च को संस्था द्वारा अमरावती में उनका नागरी सत्कार किया जाने वाला है. इस उपलक्ष्य में आयोजित दो दिवसीय कार्यक्रम ८ मार्च से समीक्षा बैठक तथा समाज के उल्लेखनीय सेवा देने वाले मान्यवरों के सत्कार से शु डिग्री होगा. मोहनराव पिंपले का सत्कार कार्यक्रम बडनेराके विधायक रवि राणा तथा पूर्व सांसद नवनीत राणा सहित अन्य मान्यवरों की उपस्थिती में होगा. विदर्भ स्वाभिमान से बातचीत करते हुए मोहनराव पिंपले ने कहा कि समाज के हर बच्चे को शिक्षित होना चाहिए. शिक्षा से ही समाज आगे बढ़ता है. इसके साथ ही हमारे संस्कृति और संस्कारों पर भी जोर दिया जाना चाहिए. आमतौर पर समाज में जब तक एकता नहीं होती है तब तक वह समाज जिस तरह से प्रगति करना चाहिए, उस तरह की प्रगति नहीं कर पाता है. समाज को आगे ले जाने के लिए शिक्षा, सामाजिक दायित्व तथा समाज के लिए कुछ करने की भावना होनी चाहिए. उन्होंने संस्था केअमरावती के कार्य की सराहना करते हुए इसका अनुकरण सभी से करने का आग्रह किया. उच्च विद्याविभूषित मोहनराव पिंपले के मुताबिक जिस तरह से बूंद-बूंद से सागर भरता है, उसी तरह समाज का हर व्यक्ति जब अपना योगदान देता है तो समाज ताकतवर भी बनता है और मजबूत भी बनता है. ऐसे में सभी को यह ध्यान में रखना चाहिए कि हम जब मिलकर काम करते हैं तो कोई काम कठिन नहीं होता है. लेकिन अकेला व्यक्ति कुछ दूरी तक चलकर थक जाता है. समाज की कड़ी को जोड़ने और समाज में हर व्यक्ति को सहयोग तथा साथ देने की भावना रखनी चाहिए. अमरावती में होने वाले कार्यक्रम की सफलतार्थ संस्था के अध्यक्ष के साथ ही सचिव और समर्पित व्यक्ति अमर विठ्ठलराव सोनवलकर के साथ ही पूरा समाज इस समारोह को शानदार बनाने के लिए प्रयास कर रहा है. अमर सोनवलकर ने बताया कि समीक्षा बैठक, समाज के मान्यवरों के सत्कार के कार्यक्रम में समाज का भरपूर सहयोग मिल रहा है, इस कार्यक्रम को बेहतरीन बनाने के लिए सभी प्रयास कर रहे हैं.

महिलाओं का हर रूप होता है अनुपम

समाजसेवी चंद्र कुमार उर्फ लप्पी भैया जाजोदिया ने कहा

अमरावती-मां के रूप में जन्म देने वाली, पत्नी के रूप में प्रेम देने वाली, बहन के रूप में भाई का सदैव भला सोचने वाली महिलाओं का हर रूप ही अनुपम होता है. इस आशय का प्रतिपादन समाजसेवी चंद्रकुमार उर्फ लप्पी भैया जाजोदिया ने किया. उनके मुताबिक सनातन धर्म में महिलाओं की महत्ता पहले से ही है.

विश्व महिला दिवस पर सभी महिलाओं को हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए उन्होंने कहा कि जिस घर में महिलाओं का सम्मान होता है और जिस घर की महिलाएं संस्कार की जननी होती है उन घरों में कभी भी किसी भी बात की कमी नहीं होती है. जिस घर में महिला को सम्मान दिया जाता है वहां माता महालक्ष्मी सहित सभी देवी देवताओं का आशीर्वाद मिलता है. विदर्भ स्वाभिमान-आनंद परिवार के आदर्श महिला पुरस्कार कार्यक्रम की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि इस तरह के प्रयास महिलाओं को प्रोत्साहित करने के लिए सदैव होना चाहिए. कार्यक्रम को उन्होंने मधुसूदन ग्रुप तथा जाजोदिया परिवार की ओर से शुभकामनाएं दी.

विदर्भ स्वाभिमान
आनंद परिवार
आदर्श महिला
पुरस्कार
२०२५
ला

हार्दिक
शुभेच्छा!

शुभेच्छुक-

डा. राजेश शर्मा,
डॉ. प्रांजल शर्मा परिवार,
अमरावती.

विदर्भ स्वाभिमान-आनंद आदर्श महिला पुरस्कार वितरण ९ को

उल्लेखनीय योगदान के लिए १० महिलाओंका सम्मान

विदर्भ स्वाभिमान, ५ मार्च

अमरावती- विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य करने वाली महिलाओं को राष्ट्रीय साप्ताहिक विदर्भ स्वाभिमान तथा आनंद परिवार की ओर से हर वर्ष आदर्श महिला पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित महिलाओं में हर कार्य करने की अपार क्षमता होती है. वह जब स्वयं को समझ लेती है और कोई लक्ष्य तय करती है तो निश्चित तौर पर उसमें सफलता मिलती ही है. समाज तथा राष्ट्र के विकास में आज महिलाओं का भरपूर योगदान है. इसी को ध्यान में रखते हुए पिछले दो वर्ष से विदर्भ स्वाभिमान तथा आनंद परिवार द्वारा उल्लेखनी कार्यो के लिए महिलाओं को आदर्श महिला पुरस्कार देकर सम्मानित किया जाता है. श्याम चौक के करीब स्थिति जोशी हॉल में ९ मार्च को सुबह १० बजे आयोजित समारोह में जिलाधिकारी सौरभ कटियार, उनकी सुविद्य पत्नी डॉ. मोनिका कटियार, जिला परिषद की सीईओ तथा कर्मठ अधिकारी संजीता मोहापात्र, मनपा आयुक्त सचिन कलंत्रे,जेल अधिक्षक चिंतामणी मैडम, डीसीपी कल्पना बारवकर, पोद्दार इंटरनेशनल स्कूल के प्राचार्य सुधीर महाजन, अभिनंदन बैंक के अध्यक्ष एड. विजय बोथरा सहित अन्य मान्यवरों को आमंत्रित किया गया है. सम्मानित होने वाली महिलाओं में लेडी गवर्नर डॉ.कमलताई गवई, जय फोटो स्टूडियो की संचालिका सौ. रेखाताई दलाल, प्राचार्य डॉ. शोभाताई रोकडे, पुलिस आयुक्तालय में सेवारत वरिष्ठ पुलिस निरीक्षक सीमा दातालकर, डॉ. दीपिका दामानी, ज्ञानशांति उपवन की प्रबंधक और बुजुर्गों की सेवा में समर्पित अरूणा पोलाड, संघर्ष के बाद भी परिवार को संभालने और संवारने वाली लीना बावनेर, बुजुर्ग, दस हजार से अधिक बुजुर्गों की सेवा करने वाली बेघर केन्द्र बडनेरा की ज्योति राठोड,अपने खर्च से २५० से अधिक गरीबों और जरूरतमंदों को तीर्थदर्शन कराने वाली सौ. सरोज गुल्हाने, अंधविद्यालय की पूर्व प्राचार्य सौ.गौरी अय्यर सहित अन्यों का समावेश है. सुबह १० से दोपहर २ बजे तक आयोजित कार्यक्रम में विशेष रूप से आनंद परिवार के सुदर्शन गांग, प्रदीप जैन, अरूण कडू, उपमहापौर प्रमोद पांडे, सौ. अंजली पांडे, विदर्भ स्वाभिमान की सौ. वीणा दुबे, विशेषांक में योगदान देने वाली श्वेता दुबे, संपादक सुभाष दुबे सहित अन्य मान्यवर उपस्थित रहेंगे. सभी संबंधितों से कार्यक्रम में उपस्थित रहने का आग्रह विदर्भ स्वाभिमान तथा आनंद परिवार द्वारा किया गया है. उल्लेखनीय है कि इस उपलक्ष्य में विदर्भ स्वाभिमान द्वारा विश्व महिला दिवस पर महिलाओं को समर्पित विशेषांक का विमोचन भी मौके पर मान्यवरों द्वारा किया जाएगा. इसमें इन महिलाओं के साक्षात्कार भी हैं.

हर दिन महिलाओं का सम्मान हो- ज्योति राठोड

अमरावती- महिलाओं का दिन एक ही दिन नहीं हो सकता है. हर दिन महिलाओं का रहता है. इस आशय का मत पिछले कई वर्षों से विधवा, दिव्यांग महिलाओं, बुजुर्गों की सेवा में स्वयं को झोंकने वाली ज्योति राठोड ने किया. विदर्भ स्वाभिमान-आनंद आदर्श महिला पुरस्कार उन्हें घोषित किए जाने पर उन्होंने साक्षात्कार में बताया कि महिलाओं के बगैर घर भी सूना होता है. जीवन में खुशियों का माध्यम महिलाएं होती हैं. उनके मुताबिक महिला व पुरूष ही परिवार, समाज तथा राष्ट्र की ताकत होती है. दोनों एक-दूसरे के पूरक होते हैं. पारिवारिक कलह के कारण घर से बाहर गई बुजुर्ग, अंध, दिव्यांग मरीज,महारोगी, मानसिक रोगी महिलाओं की सेवा में लगी रहती हैं.

ज्योति राठोड द्वारा पुत्री की तरह आत्मीयता के साथ संबंधितों की सेवा की जाती है. अभी तक उन्हें कई पुरस्कार मिल चुके हैं. उनका कहना है कि महिलाओं को महिलाओं का साथ देना चाहिए. ऐसा करने से निश्चित तौर पर महिलाओं का जीवन खुशियों भरा रहेगा. शिक्षा के साथ महिलाएँ उतनी समझदार नहीं बन पाई हैं, जितनी होनी चाहिए. उनके पक्ष में कानून तो बने हैं, लेकिन यह भी देखा गया है कि वे उन कानूनों का दुरूपयोग भी कर रही हैं. महिलाएँ पढ़ने की संस्कृति से दूर होती जा रही हैं और सोशल मीडिया की आदी होती जा रही है. महिलाओं को बच्चों का भाग्य संवारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए.हमें खुद ही अपनी समस्याओं को सचेत रूप से हल करना चाहिए. महिलाओं की मुक्ति और आजादी दिशाहीन नहीं होनी चाहिए. परिवार तथा समाज में महिलाओं को समान अधिकार मिलने के साथ उनकी जिम्मेदारी भी बढ़ गई है, इसका भान महिलाओं को रखने और परिवार को आदर्श परिवार बनाने में अपना योगदान देना चाहिए. उन्होंने कहा कि महिलाओं का सम्मान हर दिन होना चाहिए.

विदर्भ स्वाभिमान आनंद परिवार | आदर्श महिला पुरस्कार २०२५

धर्मसेवा में समर्पित है गुल्हाने दम्पति

११ साल से गरीब हुआ जरुरतमंद भक्तों को करा रहे निःशुल्क देव दर्शन

विदर्भ स्वाभिमान, ५ मार्च

अमरावती-जीवन में अपने लिए तो सभी जीते हैं लेकिन जो लोग दूसरों के लिए जीते हैं, दूसरों की खुशियों का विचार करते हैं ऐसे ही लोगों को हम देव माणुस के रूप में पहचानते हैं. स्थानीय प्रभात कॉलोनी निवासी रविंद्र गुल्हाने और सौ. सरोज गुल्हाने ऐसे ही आदर्श दंपति हैं, जिन्होंने अपना जीवन धर्म कार्य तथा लोगों के चेहरे पर खुशियों के लिए समर्पित कर दिया है. वह पिछले ११ वर्षों से तीर्थयात्रा की इच्छा रखने वाले लेकिन गरीबों के कारण नहीं जा सकने वाले भक्तों को अपने स्वयं के खर्चे से तीर्थयात्रा करना शु डिग्री किया. पिछले ११ वर्षों से अभी तक ढाई सौ से ३०० भक्तों को उन्होंने विभिन्न तीर्थ यात्राएं कराई और यह सिलसिला सदैव जारी रखने की बात कही. विदर्भ स्वाभिमान महिला रत्न पुरस्कार इसके लिए चुने जाने सरोज गुल्हाने ने बताया कि माता-पिता तथा सास-ससुर के साथ ही पति परमार्थी मिलने के चलते उनके द्वारा यह प्रयास शु डिग्री किया गया. सरकारी ठेकेदार तथा सिविल इंजीनियर रविंद्र गुल्हाने ने बताया कि कपास की फसल बर्बाद होने के कारण एक किसान की इच्छा थी लेकिन वह पंढरपुर दर्शन नहीं कर सकने का अनुभव उन्हें जीवन में आने के बाद उन्होंने तय किया कि हर साल २५ ऐसे गरीब तथा कमजोर भक्तों को वह देव-दर्शन करने का प्रयास करेंगे. पिछले ११ वर्षों से नेपाल के पशुपतिनाथ सहित अभी तक उन्होंने भारत के विभिन्न तीर्थक्षेत्रों का दर्शन करवाने का पुण्य प्राप्त किया. इस दंपति का कहना है कि भारत के कई तीर्थ क्षेत्र का दर्शन अभी तक उन्होंने करवाते समय किसी भी तरह की परेशानी कभी नहीं आई. इससे उनका विश्वास नेक कामों और भगवान में लगा और जब तक प्रभु ने जीवन दिया है तब तक गरीबों और जरूरतमंदों को निःशुल्क देवदर्शन करने का संकल्प लिया है. सरोज गुल्हाने एमएससी बीएड के साथ सोशियोलॉजी तथा योग शास्त्र में एमए हैं. प्रभात कॉलोनी स्थित संत गजानन महाराज मंदिर की ट्रस्टी सरोज गुल्हाने का कहना है कि माता-पिता तथा सास-ससुर के आशीर्वाद के साथ बेटे ऋषिकेश का उन्हें सदैव साथ मिलता है. बुजुर्ग भक्तों की सेवा के साथ नदी में यह दंपति तीर्थ दर्शन के लिए गए बुजुर्ग भक्तों को नहलाने से लेकर तैयारी करने तक का कार्य करने में कोई संकोच नहीं करता है. वह बताते हैं कि ११ साल से उनकी यह तीर्थयात्रा शु डिग्री है लेकिन आज तक भारत के विभिन्न राज्यों में दर्शन करने के बाद भी किसी तरह की दिक्कत कभी नहीं आई. १५ दिन तीर्थ दर्शन कराने के बाद लौटने पर खुशी के साथ अपार संतोष के मिलता है. वे कहते हैं कि अपार खुशी के साथ ही इससे मिलने वाली उर्जा उन्हें सालभर ताकत प्रदान करती है.

शुभेच्छुक-

विदर्भ स्वाभिमान आनंद परिवार

आदर्श महिला पुरस्कार २०२५ ला

हार्दिक शुभेच्छा!

प्राचार्य सुधीर महाजन, सौ.योगिता महाजन तथा परिवार, अमरावती

विदर्भ स्वाभिमान आनंद परिवार आदर्श महिला पुरस्कार २०२५

बुजुर्गों की सेवा ही मेरे लिए है प्रभु सेवा

ज्ञानशांति उपवन की प्रबंधक अरुणा पोलाड सबको लगती हैं बेटी जैसी

विदर्भ स्वाभिमान, ५ मार्च

अमरावती- आज स्वार्थ भरी दुनिया में जहां अपने ही सगे नाते-रिश्ते बेमानी साबित हो रहे हैं वहीं आज भी दुनिया में कई लोग ऐसे मिल जाएंगे जिनके लिए धन-दौलत ही सब कुछ नहीं होती है. बल्कि उनका आनंद और खुशी अन्य बातों से रहती है. ऐसी ही महिलाओं में शामिल है मासोद में स्थित ज्ञान शांति उपवन ओल्ड एज होम की प्रबंधक अरुणा पोलाड. वृद्धाश्रम में रहने वाले हर माता-पिता की सेवा और उनकी हर जरूरतों का ख्याल जहां वह रखती हैं, वहीं यहां रहने वाले हर बुजुर्ग माता-पिता उनके सेवाभाव के चलते अपनी बेटी के रूप में देखते हैं. वह बताती हैं कि बचपन में माता-पिता के आदर्श संस्कार और विवाह के बाद पति के सहयोग के चलते इस सेवाभावी काम को करने की दिशा में सदैव प्रयास करती है. वह कहती हैं कि भगवान के पास हर चीज का हिसाब होता है. हम इंसान के साथ चल कर सकते हैं लेकिन हमारा स्वार्थ भगवान अवश्य देखता है. वृद्ध आश्रम के हर बुजुर्ग को बेटी जैसा सम्मान देने वाली अस्र्णा के स्वभाव का बखान यहां रहने वाले गौरी और गणेश अयर के साथ सभी बुजुर्ग करते हैं. ज्ञानशांति उपवन में २८ जनवरी से आयोजित सत्संग कार्यक्रम के दौरान अस्र्णा दीदी का समर्पण निश्चित तौर पर सभी ने

आलाद रहन क बाद भा माता-पिता का भावनाओं को नहीं समझ पाते और उन्हें समर्थ रहने के बाद भी वृद्ध आश्रम में भेज देते हैं ऐसे दौर में अरुणा पोलाड जैसी बेटियां निश्चित ही हर माता-पिता और पति के लिए गर्व कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी. अरुणा के सेवाभावी स्वभाव और कार्यों को पहली नजर में देखने के बाद समाजसेवी सुदर्शन गांग ने भी अस्र्णा के कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि आजकल नौकरी में इस तरह का समर्पण बहुत कम लोगों से मिलता है. विदर्भ स्वाभिमान महिला रत्न पुरस्कार मिलने पर वह कहती हैं कि समर्पित मन से किया गया कोई भी कार्य कभी भी बेकार नहीं जाता है. वह बताती हैं कि बचपन से ही वह जो कहती हैं उसे पूरा करने का प्रयास करती हैं.

विदर्भ स्वाभिमान आनंद परिवार आदर्श महिला पुरस्कार २०२५

संघर्ष कर लीना ताई ने संवारा अपना परिवार

अमरावती- मोर्शी में पैदा हुई लीना नंदकिशोर बावनेर का जीवन संघर्ष से भरा रहा. विवाह के १० साल तक सब कुछ ठीक-ठाक चलने के बाद पति के गलत मार्ग पर लग जाने से दो बच्चों की परवरिश की बड़ी चुनौती उनके समक्ष आई. मेहनत में विश्वास करने वाली लीना ताई ने परिवार को संवारने का फैसला लिया और फिर क्या संघर्ष का सिलसिला शुरू हो गया. बेटी को एम.काम.तथा बेटे को भी शिक्षा दिलाने में जहां वे सफल रही, वही बेटी और बेटा दोनों मिलकर आज उनकी ताकत बने हैं. वह कहती है कि जीवन में कोई भी काम छोटा अथवा बड़ा नहीं होता है. माता-पिता के यहां रहने के बाद भी परिवार की बड़ी बेटी होने के कारण उन पर ही जिम्मेदारी थी. पढ़ाई में पहले से ही मेधावी रहने के बाद भी गरीबी

के कारण केवल दसवीं तक पढ़ पाई.२२ सितंबर १९९९ को विवाह होने के बाद कुछ साल अच्छे बीतने के बाद खुद निजी नौकरी कर बच्चों को संभाला और आज बच्चे उनके साथ खड़े होकर परिवार को संभालने का कार्य कर रहे हैं. पति अलग रहने के बाद भी उनकी मेहनत के चलते बेटा और बेटी के साथ मिलकर वे काम करते हुए परिवार को बेहतरीन जीवन देने में सफल रही है हैं. हम उनके प्रयासों को नमन करते हैं.

विदर्भ स्वाभिमान आनंद परिवार आदर्श महिला पुरस्कार २०२५

आरक्षण के साथ सुरक्षा है जरूरी : डॉ. शोभा रोकडे

अमरावती- महिलाओं को आरक्षण तथा आजादी तो मिली लेकिन सुरक्षा नहीं, यही मेरा भी अफसोस है. आज भी वह अपनी बात खुलकर नहीं कह सकती है. उनके मन में सबसे पहले यही ख्याल आता है कि वो एक महिला हैं, उन्हें इंसान क्यों नहीं समझा जाता, यही उनका अफ़सोस है..महिला और पुरुष के बीच समानता का सिद्धांत बचपन से ही घर में डाला जाना चाहिए. परिवार को महिलाओं के सम्मान, उनकी मेहनत और उनकी क्षमता के बारे में पता होना चाहिए. उन्हें सबसे पहले परिवार से प्रेरणा और प्रोत्साहन मिलना चाहिए..परिवार और समाज का ध्यान इस बात पर होना चाहिए कि कैसे उस स्वयंसिद्धता को बनाया जाए, अन्याय के खिलाफ़ लड़ने और खुद की रक्षा करने की ताकत महिलाओं में पैदा करने की जरूरत है. ऐसा करने से ही

महिलाएं सशक्त होंगी, इस आशय का मत प्राचार्य डॉ. शोभाताई रोकडे ने व्यक्त किया.

उनके मुताबिक शिक्षा के साथ महिलाएँ उतनी समझदार नहीं बन पाई हैं, जितनी होनी चाहिए. उनके पक्ष में कानून तो बने हैं, लेकिन यह भी देखा गया है कि वे उन कानूनों का दुरुपयोग भी कर रही हैं. महिलाएँ पढ़ने की संस्कृति से दूर होती जा रही हैं और सोशल मीडिया की आदी होती जा रही हैं. इससे हमारे संस्कार और संस्कृति की उपेक्षा हो रही है. कई परिवारों में झगड़े हो रहे हैं, पुरुष अपनी उन्नत पत्नियों के कारण पीड़ित हैं. ऐसा नहीं होना चाहिए. महिलाओं को पुरुषों से आगे नहीं भागना चाहिए, बल्कि परिवार और समाज को आगे बढ़ाने के लिए मिलकर काम करना चाहिए. हमें खुद ही अपनी समस्याओं को सचेत रूप से हल करना चाहिए. महिलाओं की मुक्ति और आजादी दिशाहीन नहीं होनी चाहिए. परिवार तथा समाज में महिलाओं को समान अधिकार मिलने के साथ उनकी जिम्मेदारी भी बढ़ गई है, इसका भान महिलाओं को रखने और परिवार को आदर्श परिवार बनाने की सीख भी दी.

विदर्भ स्वाभिमान आनंद परिवार — आदर्श महिला पुरस्कार २०२५

संघर्ष ही सफलता की कुंजी, आत्म विश्वास सबसे बड़ी ताकत

जिला परिषद सीईओ संगीता मोह पात्र का मत

विदर्भ स्वाभिमान, ५ मार्च

अमरावती-महिलाओं को संघर्ष मेहनत और लगन कि तैयारी करनी चाहिए, इसके आधार पर वे कठिन से कठिन मंजिल को आसानी से हासिल कर सकती है. समस्याओं को रोना नहीं होते हुए जो लोग समस्याओं के निराकरण के लिए सदैव कोशिश करते हैं, ऐसे ही लोगों को कामयाबी मिलती है. महिलाओं का जीवन सदैव चुनौतियों से भरा होता है. लेकिन प्रकृति ने महिलाओं को क्षमता भी उतनी ही दी है. वह अगर ठान लें तो उसके लिए कुछ भी असंभव नहीं होता है. इस आशय का मत अमरावती जिला परिषद की मुख्य कार्यकारी अधिकारी संजीता मोहपात्र ने किया. उनके मुताबिक बेटियों का जीवन सदैव चुनौतियों का रहा है लेकिन इससे रास्ता निकालने वाली बेटियां ही सदैव शानदार कामयाबी हासिल करती हैं.

विदर्भ स्वाभिमान के साथ बातचीत करते हुए बचपन से ही मेधावी छात्र आ गई लेकिन कई बार स्थितियों को लेकर परेशान होने वाली आईएएस अधिकारी मोहपात्रा ने कहा कि जीवन में कई बार स्थिति हमें सब कुछ सिखा देती हैं. जीवन में जब व्यक्ति किसी लक्ष को केंद्रित कर प्रयास करता तो निश्चित तौर पर उसमें सफलता मिलती ही है. हर हाल में खुश रहने और अपनी जीवन का लक्ष्य तक करके हुए इसे हासिल करने के लिए प्रयास करने की सलाह महिलाओं को दी. उन्होंने कहा कि महिलाओं को अपनी क्षमता पहचानना होगा.जिस दिन महिलाओं ने स्वयं को पहचान लिया, उसी दिन से वे अपने कार्यों से इतिहास रचने क्षमता हासिल कर लेती है. विश्व महिला दिवस पर उन्होंने समस्त महिलाओं को हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए सदैव अपनी खुशियों का ख्याल करने के साथी अपने स्वास्थ्य पर भी ध्यान देने की सलाह दी.

विदर्भ स्वाभिमान आनंद परिवार — आदर्श महिला पुरस्कार २०२५

संवेदनशील पुलिस अधिकारी हैं सीमा दातालकर

विदर्भ स्वाभिमान, ५ मार्च

अमरावती-हम पर जो जिम्मेदारी सौंपी गई है, उस जिम्मेदारी को जब हम सही तरीके से निभाते हैं तो यह भी किसी पुण्य से काम नहीं है. महिलाओं के महत्व की कल्पना जीवन के हर मोड़ पर की जा सकती है, वह खुशियों की जहां माध्यम होती है वही, उनमें हर तरह की स्थितियों से निपटने की ताकत भी प्रकृति ने दी है. सभी महिलाओं को स्वयं को पहचानते हुए अपने कार्यों से समाज तथा राष्ट्र के समक्ष आदर्श स्थापित करना चाहिए. इस आशय का मत पुलिस निरीक्षक सीमाताई दातालकर ने किया. विश्व महिला दिवस के उपलक्ष्य में विदर्भ स्वाभिमान द्वारा आयोजित कार्यक्रम को अपनी शुभकामनाएं देते हुए उन्होंने कहा कि समाज के हर व्यक्ति द्वारा अगर अपनी जिम्मेदारी का सही तरीके से निर्वहन किया जाए तो राष्ट्र की प्रगति तेजी से होती है.

अमरावती शहर पुलिस आयुक्तालय में पुलिस उप निरीक्षक के रूप में नियुक्त होने के बाद अपने कार्यों से जहां उन्होंने पीड़ितों को न्याय देने का प्रयास किया वहीं संवेदनशील अधिकारी के रूप में शिकायतकर्ता का समाधान करने का निरंतर प्रयास किया. राजापेठ की थानेदार रहते समय उन्होंने कई संगीन अपराधों का पर्दाफाश करने में और आरोपियों को दबोचने में सफलता हासिल की. कर्मठ महिला अधिकारी के रूप में उनका चयन विदर्भ स्वाभिमान महिला पुरस्कार के लिए किया गया है. उन्हें उत्तर उत्तर प्रगति और स्वस्थ जीवन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं.

विदर्भ स्वाभिमान आनंद परिवार — आदर्श महिला पुरस्कार २०२५

महिलाओं को निभानी होगी संस्कारों की जननी होने की भूमिका

संघर्ष में तप कर सोना बनी हैं सौ. रेखा जयंतराव दलाल

श्वेता दुबे, ८ मार्च

अमरावती-हर परिवार की खुशी, प्रगति और संपन्नता का माध्यम महिलाएं ही होती हैं. घर की एकता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने और परिवार को जोड़े रखने की ताकत भी केवल महिलाओं में होती है. महिलाएं ही संस्कारों की जननी होती है. परिवार में मां अगर संस्कारित और समझदार हो तो निश्चित ही पूरा परिवार निखर जाता है और इसके विपरीत वाली स्थिति हो तो उस परिवार को बिखरने से भगवान भी नहीं रोक सकते हैं. बचपन में दिए गए आदर्श संस्कार जीवन में सदैव काम में आते हैं. ऐसे में हर घर में सास और बहू के बीच मां-बेटी का संबंध रहे तो निश्चित तौर पर वह घर कभी किसी भी बात में पीछे नहीं रह सकता है. इस आशय का विश्वास संघर्ष में तप कर सोना हुई जय फोटो स्टूडियो की संचालिका रेखा जयंतराव दलाल ने किया. उल्लेखनीय सेवाओं के लिए महिलाओं को दिए जाने वाले विदर्भ स्वाभिमान महिला रत्न पुरस्कार परिवार प्रमुख के रूप में इस बार उन्हें घोषित किया गया है.

इस उपलक्ष्य में दिए गए साक्षात्कार में उन्होंने बताया कि जीवन में धर्म और संस्कार सदैव संवारने का काम करते हैं. उन्होंने बताया कि बचपन के संघर्ष ही हमें आगे बढ़ाने की सदैव हिम्मत और प्रेरणा देते हैं. मेहनत करने से डरने वाला व्यक्ति जीवन में कभी भी सफलता हासिल नहीं कर सकता है. संघर्ष और मुसीबत के दिनों में भी अपने और पराये की परीक्षा होती है. दुख में ही प्रभु का सुमिरन होता है, ऐसे में हमारे जीवन में सुख और दुख दोनों में ही स्थितियों में हमें समान रूप से रहना चाहिए.

मिलनसार स्वभाव के साथ सभी पर मां की ममता लुटाने वाली सौ. रेखाताई दलाल ने कहा कि वह भाग्यशाली हैं कि उनके दोनों बेटे वैभव और विकी जहां आदर्श बेटे हैं वहीं दोनों बहुएं भी बहू की बजाय उनके लिए पुत्री समान हैं. खुशहाल परिवार की प्रमुख रहने को भाग्य बताती हैं. साथ ही वह कहती हैं कि बचपन में बच्चों को आदर्श संस्कार अगर माता-पिता द्वारा दिया जाए तो किसी भी माता-पिता को बुढ़ापे में वृद्ध आश्रम जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी.

विदर्भ स्वाभिमान आनंद परिवार
आदर्श महिला पुरस्कार २०२५ ला
हार्दिक शुभेच्छा!
शुभेच्छुक-

प्राचार्य संजय शिरभाते, सौ.उज्वला शिरभाते परिवार, अमरावती

सनातन धर्म में महिलाओं को सदैव पूज्यनीय और सर्वोच्च सम्मान का स्थान दिया गया है

ब्राह्मण समाज की सौ. अनुराधा पटेरिया ने कहा,संवारती हैं परिवार,करती हैं सदैव त्याग

विदर्भ स्वाभिमान, 5 मार्च

अमरावती- भारतीय संस्कृति और संस्कारों में महिलाओं को सदैव पूज्यनीय और सर्वोच्च स्थान दिया गया है. यही कारण है कि सनातन धर्म में यहां तक कहा गया है कि जहां महिलाओं का सम्मान होता है, उनकी पूजा होती है, उसी स्थान पर प्रभु का निवास होता है. आज महिलाओं ने स्वयं को हर क्षेत्र में काबिल बनाया है. यही कारण है कि महिलाओं के बारे में सोच बदली है. बस कमी है तो केवल महिलाओं को दूसरी महिला को समझने की है. महिलाएं जिस दिन दूसरी महिला के दर्द को समझ लेंगी, उस दिन वे स्वयं सबसे बड़ी ताकत बन जाएंगी. महिलाओं को हर महिला को सहयोग करने के साथ ही उसे प्रोत्साहित करने का प्रयास करना चाहिए. इस आशय का मत जिझौतिया ब्राह्मण समाज की सौ. अनुराधा पटेरिया ने किया. उनके मुताबिक महिलाओं में सृजन की क्षमता होती है. इतना ही नहीं तो हर स्थिति में स्वयं को ढाल लेती हैं. उनके त्याग को शब्दों में व्यक्त नहीं करने की बात कही.

गरीबों के लिए अन्नदान तथा अन्य सेवाभावी कामों में स्वयं को व्यस्त रखने के साथ ही आदर्श गृहिणी सौ. अनुराधा पटेरिया के मुताबिक हर महिला को दूसरी महिला का सम्मान करने का प्रयास करना चाहिए. इससे महिलाओं की पचास फीसदी समस्या वैसे ही हर हो जाएगी.

ख़ुशियां बांटते रहें, वापस मिलेंगी-पटेरिया दम्पति

जीवन में जो लोग अन्यों की खुशी का ख्याल करते हैं, उनकी खुशियों को परमात्मा कम नहीं होने देते. परशुराम अन्नदान समिति के समर्पित कार्यकर्ताओं और मददगारों में हेमंतकुमार पटेरिया व अनुराधा पटेरिया सदैव अग्रणी रहती हैं. उनका कहना है कि मानवता की सेवा भी सबसे बड़ा धर्म है. किसी को अगर हम हंसा नहीं सकते हैं तो रूलाने का प्रयास कदापि नहीं करना चाहिए.ऐसा करने का प्रयास सभी को करना चाहिए.

भारतीय समाज में, महिलाओं को त्याग, ममता, और समर्पण की प्रतिमूर्ति माना जाता है, जो परिवार और समाज के लिए अपना सब कुछ निस्वार्थ भाव से देती हैं. उनके मुताबिक महिलाएं सदैव त्याग करती हैं. बेटी के रूप में जहां माता-पिता के घर को रोशन करती हैं, वहीं मां के रूप में परिवार को संस्कार देने तथा पत्नी के रूप में परिवार को संभालने का काम करती हैं. अपनी इच्छाओं और सपनों को परिवार की ज़रूरतों के सामने गौण मानने का त्याग महिलाएं ही कर सकती हैं.बच्चों की देखभाल और पालन-पोषण के लिए अपना समय और ऊर्जा खर्च क़रने के साथ ही परिवार के हर व्यक्ति की जरूरतों का ख्याल रखती हैं. इतना ही नहीं तो महिलाओं के बगैर घर सूना लगता है. यही कारण है कि हर धर्म में कहा गया है कि बिना महिला के घर भूत का डेरा होता है. बिन घरनी घर भूत का डेरा. घर और परिवार की व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए संघर्ष करती हैं. समाज में कई ऐसी भी महिलाएं हैं जिन्होंने पति के जाने के बाद अपने बच्चों की खातिर पूरा जीवन समर्पित कर दिया और अपने बच्चों को आदर्श संस्कार देने

महिलाएं रखती हैं सदैव आत्मीयता और सम्मान की सभी से चाहत

विदर्भ स्वाभिमान, 5 मार्च

अमरावती- महिलाओं का त्याग अपरंपार है. कभी मां बनकर, कभी पत्नी बनकर तो कभी बेटी अथवा बहन बनकर वह सदैव परिवार तथा समाज को देने का काम करती है. उसे अधिक चाहत नहीं होती है. महिलाओं की चाहत केवल स्वाभिमान, सम्मान और परिवार से आत्मीयता रहती है. हर परिवार को यह प्रयास करना चाहिए कि वह अपने घर की महिलाओं को सम्मान दे और उन्हें सदैव प्रोत्साहित करने का काम करे. ऐसा करने से निश्चित तौर पर परिवार में खुशी और तरक्की के मार्ग खुल जाते हैं. आज महिलाओं ने हर क्षेत्र में अपनी योग्यता को साबित किया है. वह चारदीवारी में जितने सक्रिय रहती है, उतनी ही सक्रिय सेना, पुलिस के साथ ही सभी क्षेत्रों में है. इस आशय का मत आदर्श पत्नी के साथ ही शिक्षा के क्षेत्र में हजारों बच्चों का भविष्य बनाने वाली मुख्याध्यापिका सौ. हर्षना बोंडे ने किया. उनके मुताबिक पति प्रा. डॉ. अजय बों डे के साथ ही परिवार का सदैव साथ मिलने के कारण उन्हें घर और स्कूल में संतुलन बिठाने में काफी मदद मिलती है.

आज महिलाओं ने स्वयं को हर क्षेत्र में काबिल बनाया है. यही कारण है कि महिलाओं के बारे में सोच बदली है. बस कमी है तो केवल महिलाओं को दूसरी महिला को समझने की है. महिलाएं जिस दिन दूसरी महिला के दर्द को समझ लेंगी, उस दिन वे स्वयं सबसे बड़ी ताकत बन जाएंगी. महिलाओं को हर महिला को सहयोग करने के साथ ही उसे प्रोत्साहित करने का प्रयास करना चाहिए. स्पष्ट वक्ता तथा शिक्षा के क्षेत्र के माध्यम से आदर्श पीढ़ी के निर्माण को अत्याधिक महत्वपूर्ण मानने वाले सौ. हर्षना बों डे के मुताबिक आज महिलाओं को आरक्षण के साथ ही सुरक्षा की अत्याधिक जरूरत है. बेटियों को उच्च शिक्षा के साथ ही हर स्थिति से निपटने की शिक्षा भी दी जानी चाहिए. ताकि वह आने वाली हर स्थिति का मुकाबला कर सके. विश्व महिला दिवस पर उन्होंने हर बेटी से स्वयं को स्वस्थ और मजबूत बनाने के साथ ही हर स्थिति से निपटने की ताकत विकसित करने की सलाह दी. साथ ही बदलते समय में हर स्थिति में स्वयं को संभालने और सुरक्षित रखने की सलाह दी.

मुख्याध्यापिका सौ. हर्षना बों डे की राय

ग्रा.पं. धामणगांव गढी पंचायत समिती अचलपूर ता. अचलपूर जी. अमरावती

निविदा सूचना (प्रथम)

ग्रामपंचायत कार्यालय धामणगांव गढी प.स. अचलपूर जि. अमरावती यांचे मार्फत १५वा वित्त आयोग सन २०२४/२५ या योजने अंतर्गत खालील कामाकरिता पूर्ण कामाच्या मोहरबंद निविदा ब-१ (b-१) प्रपत्रामध्ये बांधकाम विभाग जि.प. अमरावती यांचे वर्गातील नोंदणीकृत कंत्राटदाराकडून मागविण्यात येत आहे. कोऱ्या निविदा सरपंच/सचिव ग्रा.प.धामणगांव गढी प.स. अचलपूर ता.अचलपूर कडून देण्यात येतील.

अ. क्र.		योजनेचे नांव	अंदाजित रक्कम	बयाना रक्कम	कामाचा कालावधी	कोऱ्या निविदेची किंमत	कोऱ्यानिविदा मिळण्याचा दिनांक	भरलेल्या निविदा स्विकृतीचा दिनांक	निविदा उघडण्याचा दिनांक व वेळ	अभिप्राय
१	पाणी पुरवठा देखभाल दुरुस्ती व कम्पाऊंड वाल बांधकाम करणे	१५वा वित्त आयोग सन २०२४/२५	२५००००/-	१%	३ महिने	२००/-	६/०३/२०२५ से १३/०३/२०२५	६/०३/२०२५ से १३/०३/२०२५	१६/०३/२०२५	
२	जी.प.शाळा कंपाऊंड वाल बांधकाम करणे.	१५वा वित्त आयोग सन २०२४/२५	४०००००/-	१%	३ महिने	२००/-				
३	बंधिस्त नाली बांधकाम करणे	१५वा वित्त आयोग सन २०२४/२५	२५००००/-	१%	३ महिने	२००/-				
४	बंधिस्त नाली बांधकाम करणे	१५वा वित्त आयोग सन २०२४/२५	२५००००/-	१%	३ महिने	२००/-				
५	काँक्रीट नाली व रपटा बांधकाम करणे.	१५वा वित्त आयोग सन २०२४/२५	१०००००/-	१%	३ महिने	२००/-				
६	सार्वजनिक शौचालय दुरुस्ती	१५वा वित्त आयोग सन २०२४/२५	९५४८४/-	१%	३ महिने	२००/-				
७	जि.प. शाळा रंगरंगोटी गोटी करणे.	१५वा वित्त आयोग सन २०२४/२५	३०००००/-	१%	३ महिने	२००/-				
८	नाली बांधकाम	१५वा वित्त आयोग सन २०२४/२५	३०००००/-	१%	३ महिने	२००/-				
९	जि.प. शाळा शौचालय दुरुस्ती	१५वा वित्त आयोग सन २०२४/२५	१८०७०६/-	१%	३ महिने	२००/-				
१०	शासकीय इमारत दुरुस्ती रंगरंगोटी	१५वा वित्त आयोग सन २०२४/२५	१४०९९२/-	१%	३ महिने	२००/-				
११	भूमिगत नाली व पेव्हर ब्लॉक	१५वा वित्त आयोग सन २०२४/२५	३३९४८६/-	१%	३ महिने	२००/-				
१२	सिमेंट काँक्रीट व पेव्हर ब्लॉक बांधकाम	१५वा वित्त आयोग सन २०२४/२५	३८५३७६/-	१%	३ महिने	२००/-				
१३	ग्रामपंचायत इमारत दुरुस्ती	१५वा वित्त आयोग सन २०२४/२५	३०००००/-	१%	३ महिने	२००/-				
१४	सिमेंट काँक्रीट नाली व रपटा	१५वा वित्त आयोग सन २०२४/२५	२५००००/-	१%	३ महिने	२००/-				
१५	दिव्यांग साहित्य खरेदी	१५वा वित्त आयोग सन २०२४/२५	५४१०३/-			२००/-				

टीप- १) निविदेच्या अटी व शर्ती ग्रा.प. कार्यालय धामणगाव गढी प.स.अचलपूर जि.अमरावती यांचे कार्यालयात पहावयास मिळतील.
२) निविदा ह्या दोन लिफाफे पध्दतीने सादर करावयाचे आहेत.
३) निविदा स्विकारणे तसेच काही कारणास्तव रद्द करण्याचे अधिकार सरपंच/सचिव यांनी राखून ठेवले आहेत.
४) निविदे सोबत आवश्यक कागदपत्रे जोडणे आवश्यक आहे.

आर.जी. भोरे
ग्राम पंचायत अधिकारी
ग्रा.पं. धामणगाव गढी, प.स. अचलपूर

संस्कारों की जननी हैं महिलाएं, समझकर परिवार को चलाने का प्रयास करना होगा-निशि चौबे

ब्राह्मण समाज की एकता के लिए रहती हैं प्रयासरत, सेवाकार्य में चौबे परिवार अग्रणी

विदर्भ स्वाभिमान, 5 मार्च

अमरावती- भारत वर्ष एक सम्पन्न परंपरा और सांस्कृतिक मूल्यों से समृद्ध देश है, जहां महिलाओं का समाज में प्रमुख स्थान रहा है. ग्रामीण परिदृश्य में महिलाओं की बड़ी आबादी है. दुर्भाग्यवंश विदेशी शासनकाल में समाज में अनेक करीतियां व विकृतियां पैदा हुई, जिससे महिलाओं को उत्पीड़न हुआ. आज महिलाओं ने स्वयं को हर क्षेत्र में साबित किया है लेकिन इसके साथ ही उच्च शिक्षा के बाद कुछ बदलाव भी आया है. संस्कारों की जीवन में अत्याधिक अहमियत होती है. कहीं पद तो कहीं स्वभाव और समझ हमें सम्मान दिलाती है. इस आशय का मत सुख्यात समाजसेविका सौ. निशि चौबे ने किया. विश्व महिला दिवस पर सभी महिलाओं को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि महिलाओं का त्याग सदैव अपार होता है.

विदर्भ स्वाभिमान की पहल का स्वागत करते हुए कहा कि आज के दौर में महिलाओं ने स्वयं को साबित किया है. इस तरह के सम्मान से उनमें और विशेष करने की भावना पैदा होती है. भोलेनाथ की भक्त तथा सामाजिक कार्यों में स्वंय को झोंकने वाली तथा सेवाभाव में समर्पित निशि चौबे का कहना है कि महिलाओं को समझदारी के साथ ही इगो की बजाय आत्मीयता और ममता की मूर्ति के रूप में सोचना चाहिए. भारतीय महिलाएं ऊर्जा से लबरेज, दूरदर्शिता, जीवन्त उत्साह और प्रतिबद्धता के साथ सभी चुनौतियों का सामना करने में सक्षम हैं. भारत के प्रथम नोबेल पुरस्कार विजेता रवींद्रनाथ टैगोर के शब्दों में, हमारे लिए

महिलाएं न केवल घर की रोशनी हैं, बल्कि इस रौशनी की लौ भी हैं. अनादि काल से ही महिलाएं मानवता की प्रेरणा का स्त्रोत रही हैं. स्वयं भी सामाजिक कामों में अग्रणी तथा पालकमंत्री चंद्रशेखर बावनकुले के हाथों नागपुर में उनका महिला दिवस पर सम्मान होने वाला है. उन्होंने कहा कि महिलाओं में जन्मजात नेतृत्व गुण समाज के लिए संपत्ति हैं. बेटियों की शिक्षा के साथ संस्कारों पर जोर देने वाली सौ. निशि चौबे ने कहा कि किसी अमेरिकी विशेषज्ञ ने ठीक ही कहा है कि जब आप एक आदमी को शिक्षित करते हैं, तो आप एक आदमी को शिक्षित करते हैं. जब आप एक महिला को शिक्षित करते हैं तो आप एक पीढ़ी को शिक्षित करते हैं. इसलिए, यह इस वर्ष के अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की थीम एक स्थायी कल के लिए आज लैंगिक समानता हैं.भारतीय संस्कृति और संस्कारों में महिलाओं को सदैव पूज्यनीय और सर्वोच्च स्थान दिया गया है. यही कारण है कि सनातन धर्म में यहां तक कहा गया है कि जहां महिलाओं का सम्मान होता है, उनकी पूजा होती है, उसी स्थान पर प्रभु का निवास होता है. महिलाओं को इस महत्व को समझते हुए अपने महत्व के साथ ही परिवार,समाज तथा राष्ट्र के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की सलाह दी. उन्होंने कहा कि जिस समाज में महिलाओं की भागीदारी अधिक होती है, उस समाज की प्रगति के साथ ही यह समाज राष्ट्र विकास में भी सदैव बेहतरीन भूमिका निभाता है. सभी को उन्होंने शुभकामनाएं दी.

महिलाओं ने स्वयं को हर क्षेत्र में साबित किया है-सौ. नवनीत राणा

विदर्भ स्वाभिमान, 5 मार्च

अमरावती- देश में आज महिलाएं सबसे बड़ी ताकत बनकर उभर रही हैं. उन पर जो भी जिम्मेदारी डाली जाती है, उसे वह पूरी क्षमता के साथ निभाती हैं. महिलाओं को अपनी बहनों को सहयोग करने की मानसिकता के साथ ही स्वयं की सुरक्षा के लिए भी सदैव सतर्क रहना होगा. तभी वे आगे बढ़ सकेंगी. बदले परिदृष्य में महिलाओं को सरकार द्वारा आरक्षण के साथ हर सुविधा देने का प्रयास किया जा रहा है लेकिन इसके साथ ही जिस तरह की घटनाएं, जिस तरह से अत्याचार बेटियों , बहनों पर बढ़ रहे हैं, उसके लिए महिलाओं को ही स्वयं को मजबूत बनाना होगा. इस आशय का प्रतिपादन पूर्व सांसद तथा भाजपा की वरिष्ठ नेता सौ. नवनीत रवि राणा ने किया. उनके मुताबिक आज महिलाओं ने स्वयं की योग्यता को साबित किया है और आज सेना के साथ हर क्षेत्र में महिलाएं आगे हैं. उन्होंने महिलाओं को सदैव आगे बढ़ते रहने और इसी दिशा में सदैव प्रयास करते रहने का आग्रह करते हुए कहा कि आज महिलाओं में स्वाभिमान के साथ ही हर क्षेत्र में कामयाबी का जज्बा पैदा हुआ है.

बेबाकी तथा हिन्दुत्व तथा सनातन धर्म की महत्ता के साथ ही देश में हिन्दू शेरनी के नाम से सम्मान प्राप्त करने वाली नवनीत राणा ने कहा कि महिलाओं का त्याग अपरंपार है. कभी मां बनकर, कभी पत्नी बनकर तो कभी बेटी अथवा बहन बनकर वह सदैव परिवार तथा समाज को देने का काम करती है. उसे अधिक चाहत नहीं होती है. महिलाओं की चाहत केवल स्वाभिमान, सम्मान और परिवार से आत्मीयता रहती है. हर परिवार को यह प्रयास करना चाहिए कि वह अपने घर की महिलाओं को सम्मान दे और उन्हें सदैव प्रोत्साहित करने का काम करे. ऐसा करने से निश्चित तौर पर परिवार में खुशी और तरक्की के मार्ग खुल जाते हैं. आज महिलाओं ने हर क्षेत्र में अपनी योग्यता को साबित किया है. वह चारदीवारी में जितने सक्रिय रहती है, उतनी ही सक्रिय सेना, पुलिस के साथ ही सभी क्षेत्रों में है. विश्व महिला दिवस पर उन्होंने सभी महिलाओं को हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए सभी की सुख,समृद्धि,स्वास्थ्य के साथ प्रगति की कामना की.

महिलाएं बने एक-दूसरे की ताकत, स्वयं को करें इतना मजबूत की कोई हिम्मत न कर सके

अपार क्षमता की धनी होती हैं महिलाएं-विधायक सौ.सुलभा खोड़के

उच्च शिक्षा, आत्मनिर्भरता के साथ महिलाएं दे राष्ट्र विकास में भी योगदान,अपार क्षमताओं की होती हैं धनी,खुद के समझें

विदर्भ स्वाभिमान, 5 मार्च

अमरावती- महिलाओं में अपार क्षमता प्रकृति ने दी है. घर और बाहर दोनों ही मोर्चों पर बेहतरीन काम करने की क्षमता उनमें निहित होती है. बेटियों को उच्च शिक्षा के साथ ही स्वयं को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में प्रयास करना होगा. सरकार द्वारा महिलाओं के कल्याण के लिए अनगिनत योजनाएं शुरू की गई हैं. वित्तमंत्री तथा उपमुख्यमंत्री अजीत पवार स्वयं भी महिलाओं के कल्याण के लिए गंभीर है. महाराष्ट्र में लाड़ली बहन योजना के माध्यम से महिलाओं को आर्थिक मदद दी जा रही है. महिलाओं को भी शिक्षण तथा प्रशिक्षण के माध्यम से स्वयं को आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास करना चाहिए. इससे निश्चित तौर पर वे सभी मामले में आगे रहेंगी. महिलाओं को एक-दूसरे को सहयोग देने तथा समझने से आधी समस्या वैसे ही हल हो जाएगी. इस आशय का मत अमरावती की लोकप्रिय विधायक सौ. सुलभाताई खोड़के ने किया.

विदर्भ स्वाभिमान-आनंद परिवार द्वारा आदर्श महिला पुरस्कार को अपनी शुभकामनाएं देते हुए इस पहल की सराहना की.

विधायक सुलभा संजय खोड़के ने कहा कि देश में आज महिलाएं सबसे बड़ी ताकत बनकर उभर रही हैं. उन पर जो भी जिम्मेदारी डाली जाती है, उसे वह पूरी क्षमता के साथ निभाती हैं. महिलाओं को अपनी बहनों को सहयोग करने की मानसिकता के साथ ही स्वयं की सुरक्षा के लिए भी सदैव सतर्क रहना होगा. तभी वे आगे बढ़ सकेंगी.उनके मुताबिक आज महिलाओं ने स्वयं की योग्यता को साबित किया है और आज सेना के साथ हर क्षेत्र में महिलाएं आगे हैं. उन्होंने महिलाओं को सदैव आगे बढ़ते रहने और इसी दिशा में सदैव प्रयास करते रहने का आग्रह करते हुए कहा कि आज महिलाओं में स्वाभिमान के साथ ही हर क्षेत्र में कामयाबी का जज्बा पैदा हुआ है. विश्व महिला दिवस पर सभी महिलाओं को हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए कहा कि शिक्षा तथा प्रशिक्षण के माध्यम से हर बेटी को स्वयं को मजबूत बनाने के साथ ही स्वयं रोजगार के साथ ही अन्य महिलाओं को रोजगार देने लायक बनाना चाहिए.

महिलाओं का सदैव सम्मान होना चाहिए-सुदर्शन गांग

महिलाएं समानता की अभिलाषी और अधिकारी हैं

अमरावती- महिलाओं का हर रूप ही अनुपम और त्याग से भरा हुआ होता है. मां,बहन, पत्नी,बेटी,बहू सहित सभी भूमिकाओं में वह सदैव रिश्तों को मजबूती से निभाती है. स्वयं की बजाय सदैव अन्यों की खुशियों का विचार करती है. इस त्याग के लिए महिलाओं का सदैव सम्मान किया जाना चाहिए. इस आशय का प्रतिपादन समाजसेवी सुदर्शन गांग ने किया. उनके मुताबिक महिलाएं ही आदर्श संस्कारों की जननी होती हैं. वे एक परिवार नहीं बल्कि दो परिवारों को खुशियां देने के साथ ही सभी को समझने के साथ ही उन्हें सदैव सम्मान देती हैं. जहां महिलाओं का सम्मान होता है, वहां कभी किसी बात की कमी नहीं होती है. विश्व महिला दिवस पर सभी महिलाओं को मंगलमय शुभकामनाएं देते हुए सुख,समृद्धि और बेहतरीन स्वास्थ्य की कामना भी भारतीय जैन संगठन के राष्ट्रीय ट्रस्टी सुदर्शन गांग ने किया. साथ ही महिलाओं को समानता का अधिकारी बताया.

महिलाओं के विभिन्न रूपों को
सर्वप्रथम हम नमन, वंदन करते हैं.
वह समानता की वास्तविक अधिकारी
और अभिलाषी हैं.
प्रतिवर्ष अनुसार इस वर्ष भी
विश्व महिला दिवस के उपलक्ष्य में
राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक
विदर्भ स्वाभिमान तथा व्यवसाय के क्षेत्र में
अग्रणी आनंद परिवार द्वारा
विभिन्न क्षेत्रों में अपने
कार्यों की अमिट छाप
छोड़ने वाली महिलाओं को

विदर्भ स्वाभिमान आनंद परिवार आदर्श महिला पुरस्कार २०२५

प्रदान कर सम्मानित किया जाएगा.

प्रमुख अतिथि

मा.श्री.सौरभ कटियार जिलाधिकारी, अमरावती जिला	**मा. सचिन कलंत्रे** मनपा आयुक्त, अमरावती महानगरपालिका.
सौ.कल्पना बारवकर पुलिस उपायुक्त अमरावती शहर पुलिस	**मा.संजीता मोहापात्र** सीईओ, जिला परिषद, अमरावती
मा.श्री.सुधीर महाजन प्राचार्य, पोदार इंटरनेशनल स्कुल,अम.	**मा. एड.विजय बोथरा,** अध्यक्ष, अभिनंदन अर्बन बैंक, अम.
मा.चंद्रकुमारजी जाजोदिया वरिष्ठ समाजसेवी.	**पूज्यनीय श्रीमती शिवपतिदेवी दुबे** प्रेरणा स्रोत मां

कार्यक्रम स्थल : जोशी हाल, महिला महाविद्यालय के पास, अमरावती.
रविवार, 9 मार्च 2025, समय-सुबह 10:00 बजे

विनित-स्वागतोत्सुक : विदर्भ स्वाभिमान, आनंद परिवार
संपर्क: 9423426199/8855019189

विदर्भ स्वाभिमान आनंद परिवार
आदर्श महिला पुरस्कार २०२५ ला
हार्दिक शुभेच्छा!

-शुभेच्छुक-

हेमंत कुमार
सौ.अनुराधा पटेरिया
परिवार, अमरावती